(ISSN: 2393-8048)

International Seminar on September 16th, 2024
"Exploring the Frontiers of Interdisciplinary Research (ICEFIR-2024)"
Organized By: Nagpal Charitable Trust, Sri Ganganagar
Venue: Maharaja Agrasen Vidya Mandir School, Sri Ganganagar

# प्रेमचंद और शरत चंद्र गोस्वामी के विशेष संदर्भ में स्वतंत्रता-पूर्व हिंदी एवं असमिया लघुकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन: एक अंतर्विषयक परिप्रेक्ष्य

ज्ञानी राम, शोधार्थी, हिंदी विभाग, सिक्किम अल्पाइन विश्वविद्यालय, नामची (सिक्किम)

## सारांश

भारतीय साहित्य में स्वतंत्रता-पूर्व काल सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इस कालखंड में हिंदी एवं असमिया साहित्य ने भारतीय समाज की वास्तविक परिस्थितियों, औपनिवेशिक शोषण, सामाजिक विषमता, गरीबी, जातिगत भेदभाव, ग्रामीण जीवन तथा राष्ट्रीय चेतना को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य प्रेमचंद और शरत चंद्र गोस्वामी के विशेष संदर्भ में स्वतंत्रता-पूर्व हिंदी एवं असमिया लघुकथाओं का तुलनात्मक एवं अंतर्विषयक अध्ययन करना है। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों के माध्यम से भारतीय ग्रामीण जीवन, किसान-मजदूरों की समस्याओं, सामाजिक कुरीतियों, आर्थिक शोषण तथा मानवीय संवेदनाओं का यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत किया। वहीं शरत चंद्र गोस्वामी की असमिया साहित्यिक रचनाओं में असमिया समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों, ग्रामीण जीवन, पारंपरिक मान्यताओं तथा मानवीय संबंधों की विविधता को अभिव्यक्ति प्राप्त हुई। इस अध्ययन में दोनों साहित्यकारों की रचनाओं के कथ्य, शिल्प, भाषा, चरित्र-चित्रण, सामाजिक यथार्थ एवं वैचारिक दृष्टिकोण का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। साथ ही, औपनिवेशिक शासन, राष्ट्रीय आंदोलन, सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक अस्मिता तथा आर्थिक विषमता जैसे ऐतिहासिक एवं समाजशास्त्रीय संदर्भों के आधार पर दोनों भाषाओं की लघुकथाओं में समानताओं और भिन्नताओं को समझने का प्रयास किया गया है। अंतर्विषयक दृष्टिकोण के अंतर्गत साहित्य, इतिहास, समाजशास्त्र एवं संस्कृति के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण करते हुए यह अध्ययन स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि स्वतंत्रता-पूर्व हिंदी एवं असमिया लघुकथाएँ अपने-अपने क्षेत्रीय परिवेश के बावजूद भारतीय समाज की व्यापक समस्याओं और मानवीय संवेदनाओं को किस प्रकार अभिव्यक्त करती हैं। यह शोध भारतीय भाषाओं के साहित्यिक अंतर्संबंधों, क्षेत्रीय विविधताओं तथा साझा राष्ट्रीय चेतना को समझने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। निष्कर्षतः, प्रेमचंद और शरत चंद्र गोस्वामी की साहित्यिक दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन भारतीय साहित्य की बहुभाषिक परंपरा, सामाजिक यथार्थ और सांस्कृतिक एकता को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करता है।